भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष मुद्दे एवं चुनौतियां विषय पर संगोष्ठी 27 से

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष चुनौतियां विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। 27 व 28 मार्च को होने वाली यह संगोष्ठी राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद के सहयोग एवं भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित की जा रही है। संगोष्ठी के संयोजक प्रो. सतीश कुमार ने बताया कि इस कार्यक्रम की अध्यक्षता हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ करेंगे। उन्होंने कहा कि दो दिवसीय इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में इतिहासकार प्रो. कपिल कुमार, सामाजिक चिंतक एवं ऑर्गेनाइजर के संपादक प्रफुल्ल केतकर, आईआईपीए की प्रोफेसर सुषमा यादव, छत्तीसगढ़ कैडर के आईजी एसआरपी कल्लुरी, प्रो. संजीव शर्मा, प्रो. अश्वनी माहपात्र, प्रो. एनडीएन वाजपेयी, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. मजहर आसिफ जैसे विद्वानों का उद्बोधन होगा।

हकेंवि में दो दिवसीय संगोष्ठी

जागरण संवाददाता, महेंद्रगढ़ : हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष चुनौतियां विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। 27 व 28 मार्च को होने वाली यह संगोष्ठी राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद के सहयोग व भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित की जा रही है। संगोष्ठी के संयोजक प्रो. सतीश कुमार ने बताया कि इस कार्यक्रम की अध्यक्षता हकेंवि के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ करेंगे। दो दिवसीय इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में इतिहासकार प्रो. कपिल कुमार, सामाजिक चिंतक एवं ऑर्गेनाइजर के संपादक प्रफुल केतकर, आईआईपीए की प्रोफेसर सुषमा यादव, छत्तीसगढ़ केडर के आईजी एसआरपी कल्लुरी, प्रो. संजीव शर्मा, प्रो. अश्वनी माहपात्र, प्रो. एनडीएन वाजपेयी, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. मजहर आसिफ जैसे विद्वानों का उद्बोधन होगा। भारतीय राष्ट्रवाद की परिभाषा एवं नित्य उठ रहे प्रश्न के आयामों और चुनौतियों के संदर्भ में यह अत्यंत अपरिहार्य हो गया है।

'भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष मुद्दे' विषय पर संगोष्ठी कल से

महेंद्रगढ़ | हकेंवि के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा 'भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष चुनौतियां' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित होगी। 27 व 28 मार्च को होने वाली यह संगोष्ठी राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद के सहयोग व भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद तथा भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित की जा रही है। अध्यक्षता कुलपति प्रो. कुहाड़ करेंगे।

'भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष मुद्दे एवं चुनौतियां' पर रखे विचार

महेंद्रगढ़ (ब्यूरो)। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष मुद्दे एवं चुनौतियां विषय पर मंगलवार से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से यह आयोजन राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया तथा इसे भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सहयोग से किया जा रहा है। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने की जबकि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद् के संरक्षक कृष्ण भट्ट उपस्थित रहे। वक्ताओं ने आज के संदर्भ में इतिहास, वर्तमान व भविष्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय राष्ट्रवाद और उसके समक्ष मुद्दे व चुनौतियां विषय पर विस्तार से अपना पक्ष रखा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि यह दो दिवसीय संगोष्ठी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए बेहद ज्ञानवर्धक साबित होगी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कृष्ण भट्ट ने कहा कि राष्ट्रवाद शब्द का अर्थ भारत व पश्चिमी देशों के संदर्भ में अलग-अलग है। भारत में राष्ट्र शब्द प्रचलित है और वाद की बात आती है तो उससे संघर्ष उत्पन्न होता है। इसलिए भारत में राष्ट्र महत्वपूर्ण है। इसी कड़ी में विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलते हुए आर्गेनाइजर पत्रिका के संपादक प्रफुल्ल केतकर ने कहा कि राष्ट्रवाद को समझने के लिए पहले यह जाना जाए कि क्या सचमुच भारत का कोई राष्ट्रवाद है।

चीन के मामले में क्यों खामोश हैं वामपंथी : प्रो . कपिल

जागरण संवाददाता, महेंद्रगढ़ : प्रख्यात इतिहासकार प्रो. कपिल कुमार ने कहा कि वामपंथ का समर्थन करने वाले लोग बोलने की आजादी की मांग करते हैं, लेकिन चीन के विषय में वे खामोश बने रहते हैं। उन्होंने कहा कि इस बात को समझने के लिए जरूरी है कि पहले हम अपनी मानसिकता को बदलें और आजादी की लड़ाई के उन अनछुए पहलुओं का अध्ययन करें जिनसे कि सही मायने में यह ज्ञात हो सके कि आखिर ये अलख आम भारतवासी के द्वारा जगाई गई थी न कि किसी राजनीतिक दल के द्वारा। वे मंगलवार को हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में 'भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष मुद्दे एवं चुनौतियां' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के शुभारम्भ अवसर पर बोल रहे थे।

संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में किया गया है। कार्यक्रम

केंद्रीय विश्विद्यालय में आयोजित संगोष्ठी में उपस्थित वक्ता ● जागरण

में मुख्य अतिथि कृष्ण भट्ट ने कहा कि राष्ट्रवाद शब्द का अर्थ भारत व पश्चिमी देशों के संदर्भ में अलग-अलग है। भारत में राष्ट्र शब्द प्रचलित है और वाद की बात आती है तो उससे संघर्ष उत्पन्न होता है। इसलिए भारत में राष्ट्र महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि आज के संदर्भ में यह चर्चा आम है कि आर्य भारत में बाहर से आकर बसे हैं या भारत के ही हैं। इसके लिए सबसे जरूरी है कि हम मौलिक चिंतन करें कि हम कौन हैं, कहां से आए हैं?

इसी कड़ी में विशिष्ट वक्ता के रूप में ऑर्गेनाइजर पत्रिका के संपादक प्रफुल्ल केतकर ने कहा कि राष्ट्रवाद को समझने के लिए पहले यह जाना जाए कि क्या सचमुच भारत का अपना कोई राष्ट्रवाद है? इसके लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व अवधारणाओं पर मंथन की जरूरत है। उन्होंने कहा कि मार्क्स कभी भारत नहीं आए थे, लेकिन उन्होंने भारत के संदर्भ में जो बाते कहीं और जिनका असर नीति निर्धारण पर देखने को मिला। यह चिंता का विषय है। भारत को सबसे ज्यादा नुकसान ब्रिटिश शासन ने पहुंचाया क्योंकि इसने भारत की शिक्षा व्यवस्था को निशाना बनाया। आज हमें भारत को समझने के लिए भारतीय लेखकों के चिंतन को पढ़ने की जरूरत है।

कार्यक्रम में शामिल राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद की अध्यक्ष व विवि अनुदान आयोग (यूजीसी) की सदस्य प्रो. सुषमा यादव ने कहा कि हरियाणा केंद्रीय विवि में राष्ट्रवाद पर चर्चा एक उम्दा प्रयास है। उन्हें इस बात की खुशी है कि उनके संगठन व राजनीति विज्ञान विभाग के माध्यम से यह आयोजन दक्षिण हरियाणा में पहली बार आयोजित हो सका। प्रो. सुषमा यादव ने इस आयोजन के लिए कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ सहित राजनीति विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रो. सतीश कुमार व उनके सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में राजस्थान विवि के डॉ. राजेश शर्मा व जवाहर लाल नेहरू विवि के प्रो. मजहर आसिफ ने अपने विचार विद्यार्थियों व शोधार्थियों के समक्ष रखे।

राष्ट्रवाद के समक्ष चुनौतियों पर हकेंविवि में संगोष्ठी

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष मुद्दे एवं चुनौतिया विषय पर मंगलवार से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। जिसमें भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद आईसीएसएसआर व भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद आईसीएचआर का सहयोग रहा। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद् के संरक्षक कृष्ण भट्ट थे। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने की। इस अवसर पर वक्ताओं ने

महेंद्रगढ़। मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ करते प्रो. आरसी कुहाड़। फोटोः हरिभूमि

आज के संदर्भ में इतिहास, वर्तमान व भविष्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय राष्ट्रवाद और उसके समक्ष मुद्दे व चुनौतियां विषय पर विस्तार से अपना पक्ष रखा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि यह दो दिवसीय संगोष्ठी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए बेहद ज्ञानवर्धक साबित होगी। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में ही वक्ताओं को सुनकर इस बात का यकीन हो गया है कि विद्यार्थियों को इस आयोजन के माध्यम से भारतीय राष्ट्रवाद एवं मुद्दों व चुनौतियों को समझने का एक नया नजरिया प्राप्त होगा। कार्यक्त्रम में मुख्य अतिथि कृष्ण भट्ट ने कहा कि राष्ट्रवाद शब्द का अर्थ भारत व पश्चिमी देशों के संदर्भ में अलग-अलग है। भारत में राष्ट्र शब्द प्रचलित है और वाद की बात आती है तो उससे संघर्ष उत्पन्न होता है। इसलिए भारत में राष्ट्र महत्वपूर्ण है।

संगोष्ठी 'भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष मुद्दे एवं चुनौतियां' विषय पर संगोष्ठी, विशेषज्ञों ने रखे विचार

राष्ट्रवाद समझने को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर मंथन जरूरी

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ में 'भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष मुद्दे एवं चुनौतियां' विषय पर मंगलवार से दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। विवि के राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से यह आयोजन राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इसे भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) व भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर) का सहयोग है।

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने की। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद के संरक्षक कृष्ण भट्ट थे।

महेंद्रगढ़. मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़।

वक्ताओं ने आज के संदर्भ में इतिहास, वर्तमान व भविष्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय राष्ट्रवाद और उसके समक्ष मुद्दे व चुनौतियां विषय पर विस्तार से अपना पक्ष रखा। कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि यह दो दिवसीय संगोष्ठी विवि के विद्यार्थियों के लिए बेहद ज्ञानवर्धक साबित होगी। मुख्य अतिथि कृष्ण भट्ट ने कहा कि राष्ट्रवाद शब्द का अर्थ भारत व पश्चिमी देशों के संदर्भ में अलग-अलग है। भारत में राष्ट्र शब्द प्रचलित है और वाद की बात आती है तो उससे संघर्ष उत्पन्न होता है। इसलिए भारत में राष्ट्र महत्त्वपूर्ण है। विशिष्ट वक्ता एक पत्रिका के संपादक प्रफुल्ल केतकर ने कहा कि राष्ट्रवाद को समझने के लिए पहले यह जाना जाए कि क्या सचमुच भारत का अपना कोई राष्ट्रवाद है। इसके लिए ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व अवधारणाओं पर मंथन की जरूरत है। विशिष्ट वक्ता व इतिहासकार प्रो. कपिल कुमार ने विस्तार से राष्ट्रवाद और इसकी पृष्ठभूमि पर विद्यार्थियों को ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने देश में बोलने की आजादी पर चर्चा करते हुए कहा कि वामपंथ का समर्थन करने वाले लोग इस आजादी की मांग करते हैं, लेकिन चीन के विषय में वे खामोश रहते हैं।

शामिल राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद की अध्यक्ष व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की सदस्य प्रो. सुषमा यादव ने कहा कि हकेंवि में राष्ट्रवाद पर चर्चा एक उम्दा प्रयास है। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात की खुशी है कि उनके संगठन व राजनीति विज्ञान विभाग के माध्यम से यह आयोजन दक्षिण हरियाणा में पहली बार आयोजित हो सका। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में राजस्थान विश्वविद्यालय के डॉ. राजेश शर्मा व जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. मजहर आसिफ ने विचार विद्यार्थियों व शोधार्थियों के समक्ष रखे। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. सुषमा यादव ने की।

राष्ट्रवाद को पश्चिमी दृष्टिकोण से समझना ठीक नहीं, इसक अपनाएं भारतीय दृष्टिकोण : प्रो. महापात्रा

महेंद्रगढ़. राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में बोलते हुए राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद् के संरक्षक कृष्ण भट्ट।

महेंद्रगढ़ | हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में 'भारतीय राष्ट्रवाद के समक्ष मुद्दे एवं चुनौतियां' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हो गया। दूसरे दिन समापन सत्र के मुख्य अतिथि हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एडीएन वाजपेयी थे। मुख्य वक्ता के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के सदस्य प्रो. जी.गोपाल रेड्डी व जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रो. अश्वनी महापात्रा थे। प्रो. महापात्रा ने कहा कि प्रो. अश्वनी महापात्रा ने कहा कि राष्ट्रवाद को पश्चिमी दृष्टिकोण से समझना ठीक नहीं होगा। इसके लिए हमें भारतीय परिपेक्ष्य को ध्यान में रखना होगा अन्यथा हम इसके भारत के संदर्भ में अर्थ को समझ ही नहीं सकते हैं। राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. सतीश कुमार राष्ट्रीय समाज विज्ञान परिषद के संरक्षक कृष्ण भट्ट व अध्यक्ष प्रो. सुषमा यादव ने अतिथियों का स्वागत एवं आभार व्यक्त किया।